ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 103-104
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

काला पादरी उपन्यास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

एकता
शोध अध्येत्री– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Received-30.07.2023, Revised-05.08.2023, Accepted-10.08.2023 E-mail: ekta070290@gmail.com

सारांशः काला पादरी तेजिन्दर द्वारा लिखित एक यथार्थपरक उपन्यास है जिसमें लेखक मध्यप्रदेश के सरगुजा जिले के उराँव आदिवासी समाज के दर्द का ज्वलंत दस्तावेज प्रस्तुत करता है। उराँव आदिवासी भोले–भाले, निरक्षर, गरीब एवं अज्ञानी आदिवासी है जो अकाल से पीड़ित होने के कारण धर्म के ठेकेदारों तथा सरकारी योजनाओं के धूर्त लोगों के द्वारा बहुत ही आसानी से छले जाते है। जिससे उनको अपने जीवन में अनेक तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कुंजीभूत शब्द– आदिवासी समाज, दस्तावेज, ज्वलंत, निरक्षर, गरीब, अज्ञानी आदिवासी, पीड़ित, सरकारी योजनाओं, समाधान।

वर्तमान समय में बढ़ते बाहरी प्रवेश ने आदिवासियों को उनके ही जंगलों से बहिष्कृत कर दिया है तथा उनके जंगलों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर धीरे–धीरे उनके जंगलों को ही समाप्त कर दिया है जिसके कारण उचित समय पर वर्षा न हो पाने के कारण उनकी फसलों को उचित समय पर पानी नहीं मिल पाता है। उनके अथक परिश्रम के बावजूद भी उनको पर्याप्त मात्रा में फसल प्राप्त नहीं हो पाती है। जिसका स्पष्ट प्रभाव इनकी आजीविका पर पड़ता हुआ दिखाई देता है। उपन्यास में सरगुजा जिले के उराँव आदिवासी समाज के लोगों की स्थिति बहुत ही दर्दनाक एवं भयंकर बनी हुई है। अकाल से त्रस्त उराँव आदिवासी भूख के कारण अपनी जान से हाथ धो बैठते है। उपन्यास में बूढ़ा व्यक्ति अपने दर्द का बखान करते हुए कहता है कि साहब यहाँ पर भूख शांत न होने के कारण उसके बेटे तथा बच्चों की मृत्यु हो गई थी। लोगों को उचित आहार न मिलने के कारण ये मृत्यु का शिकार हो रहे है तथा दूसरा मृत्यु का मुख्य कारण भूख को शांत करने के लिए कुछ जंगली पेड़–पौधों को आहार के रूप में ग्रहण करना है जिसके कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। लेखक के शब्दों में "इस क्षेत्र के आदिवासी पिछले कई दिनों से जहरीली जंगली बूटियाँ खा रहे हैं, और जिले के भीतरी इलाकों में तो कुछ लोग अपनी भूख मिटाने के लिए बिल्लियों और बंदरों का शिकार कर, उनका मांस तक खा रहे है"[1] उराँव आदिवासी भूख रूपी अकाल से परेशान होकर उसके समाधान के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं कि "ऐ ईश्वर! परमपिता परमेश्वर! मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि इस साल हमारे गाँव में हाथी फिर से भेजना और हाथियों को आर्शीवचन देना ईश्वर कि वे हमारे झोपड़ें तहस–नहस करने हमारे घर अवश्य आये।"[2] इस तरह उराँव आदिवासी अपने घरों को तुड़वाकर सरकार से मिले हुए मुआवजे से अपनी भूख को शांत करने की योजना के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं।

भूख व्यक्ति के जीवन की सबसे बडी कमजोरी है। व्यक्ति सबसे पहले अपनी भूख को शांत करने के लिए अपने जीवन में परिश्रम करता है। जिसके लिए वह हर सम्भव प्रयास करता है। उपन्यास में गोयल सेठ के गोदाम चावल से भरे हुए है। कुजुर आदिवासी लड़का अपने मित्र की एवं उसके अन्य साथियों की मदद करने के लिए चावल से भरे हुए गोदामों को लूटते है जहाँ पर कुछ हद तक वे सफलता भी प्राप्त करते है, किंतु वापसी के समय में पकड़े जाते है तथा न्यायधीश के सामने पूरी ईमानदारी के साथ अपना जुर्म भी कबूलते है, किंतु यहाँ दुखद बात यह है कि इसके पश्चात् भी उनको चावल का एक दाना तक नसीब नहीं हो पाता है। और इसी भूख के कारण उनका शरीर धीरे–धीरे कंकाल में तब्दील हो जाता है जिसका उनके पास कोई समाधान नजर नहीं आता है।

काला पादरी उपन्यास की सबसे प्रमुख समस्या उनका धार्मिक संकट है। जिससे उनको जीवन में अनेक तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज के समय में बहुत ही ज्यादा संख्या में आदिवासी लोगों का धर्म परिवर्तन किया जाता है। जिससे आदिवासी लोग अपने धर्म एवं संस्कृति से पृथक हो रहे है उनको एक तरह का जीवन जीने को बाध्य किया जा रहा है। इस धर्म परिवर्तन से धीरे–धीरे उनका अस्तित्व ही समाप्त होता जा रहा है जिससे उनको जीवन में अनेक तरह की समस्याएँ होती है। आज देश में बढ़ते धर्म परिवर्तन की विचार धारा तथा होड़ की वृत्ति को देखते हुए बहुत से आदिवासियों का धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। लेखक के शब्दों में "एक लाख इसाइयों को पुनः हिन्दू बनाने की जूदैव की घोषणा।"

"उराँव आदिवासियों के धर्मांतरण के आरोपी पादरी को छह माह की कैद तथा जुर्माना।"[3]

उपन्यास में बढ़ते धर्म परिवर्तन के कारण न्यायिक अधिकारी द्वारा पादरी तथा सिस्टर को सजा सुनाई जाती है। आज आदिवासी समाज के हितों का दिखावा कर उनको इसाई बनाने की कोशिश की जा रही है, ताँकि ये लोग अपने धर्म को बढ़ावा दे सके। किंतु उनकी इस धर्म को बढ़ावा देने की कोशिश में एक भोला–भाला आदिवासी पिसता है। जेम्स खाखा जिसके दादाओं ने भूख को शांत करने के लिए धर्म परिवर्तन किया था। यही जेम्स खाखा अपनी प्रकृति (संस्कृति) से पृथक होकर इसाईयों के यथार्थ पर प्रकाश डालते हुए कहता है "क्या यह सच नहीं कि हमारी इमेजेज़ में पहाड़ थे, नदियां थीं, पेड़ थे, चीते थे और राजा ने हमें बंधुआ बना दिया, फिज़िकली और इक्नॉमिकली एक्सप्लायट किया, लेकिन आपने क्या किया? यू रादर टेम्ड अस, आपने हमें पालतू बना दिया हमारे लिये हिंदू फंडामेंडलिस्टों और आपमें अब कोई खास फ़र्क नहीं है। हमारी सारी इमेजेज़ छिन लीं आप लोगों ने....."[4]

इस तरह से भोले–भाले उराँव आदिवासी लोगों को लालच देकर उनकी सम्पति, उनकी पहचान ही उनसे छीन ली जाती है तथा इनकी संस्कृति, पेड, पौधे, पशु–पक्षी, नदियां तथा जंगलों को नष्ट करके अपने धर्म का विस्तार करने के लिए प्रभु यीशु की स्थापना की जाती है। वर्तमान समय में इसाई लोग अपने धर्म विस्तार के लिए उन्हीं आदिवासी लोगों की मदद करेंगें जो इनके धर्म को अपनाएगा। इसके विपरीत जो इनके धर्म को नहीं अपनाएगा ये उनकी मदद कभी नहीं करेंगे। जहाँ एक तरफ लोगों को रोटी या खाने

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

का लालच देकर उनको उनके ही धर्म से विमुख कराकर धर्मान्तरण किया जा रहा है, तो दूसरी तरफ हमारे देश की सरकारें अपने वोट के लिए लोगों को भोजन उपलब्ध करा रही है। यह उपन्यास राजनीतिक नेताओं के यथार्थ से पर्दा हटाते है कि कैसे ये सरकारें अपने वोट को प्राप्त करने के लिए हिन्दू–इसाई को आपस में टकरा रही है। ''मुझे ठीक से पता नहीं, पर वे चाहते हैं कि हम चर्च से उनकी पार्टी का खुला प्रचार करें, बिशपस्वामी अपने अनुनायियों से यह कहें, कि पैलेस का समर्थन करो वरना या तो भूखे मर जाओगे सूखे में या इस तरह मार दिये जाओगे। हिन्दू फंडामेडेलिस्ट तुम्हें मारेगा और हम तमाशा देखते रहेंगें। अगर हमारी मदद चाहते हो तो अपने लोगों से साफ़–साफ़ कहो कि हमें वोट दें और सुरक्षित रहें।''[5] दिन प्रतिदिन की बढती समस्याओं से आदिवासी समाज के लोगों का जीवन अंधकारमय बनता जा रहा है। भोजन के लिए धर्म परिवर्तन पर जेम्स इस पूरी व्यवस्था का विरोध करता है, जो इनको गुलामी की जजीरों में जकड़ती है। जेम्स के शब्दो में ''माँ कहती है कि चूँकि चर्च ने तुम्हारे पिता और दादा को रोटी दी थी, काम दिया था और राजा की बेगार से मुक्ति दिलवायी थी, इसलिए तुम्हें अपना पूरा जीवन चर्च की सेवा में बिताना है क्या यह एक तरह का बंधुआ विचार नहीं है।''[6] यहाँ जेम्स आधुनिक समाज का प्रतिनिधित्व करता हुआ धर्म परिवर्तन के नाम पर गुलामी का मुलामी का विरोध करता है। आदिवासी लोग जंगलों में रहकर ही अपने जीवन की न्यूनतम से न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करते है किंतु वर्तमान समय में आदिवासियों को अपनी आजीविका के लिए अथक परिश्रम करना पड़ता है। जिसके पश्चात् उनको खाना नसीब नहीं होता। उपन्यास में अपनी भूख को शांत करने के लिए बच्चे पहले चलती रेलगाड़ी से माल को नीचे गिराते है फिर स्वयं नीचे कूदकर नीचे गिर हुए माल को इकट्ठा करते है जिससे ये कुछ समय के लिए अपनी भूख को शांत कर लेते है। इसी आर्थिक तंगी के कारण ये लोग चाय में दूध का प्रयोग नहीं करते, बल्कि काली चाय का प्रयोग कर चाय की तृप्ति करते है। जो कि इनकी गरीबी का बोध कराती है। ''गाढे काले रंग की चाय। चाय में दूध नहीं था सिर्फ, शक्कर थी, चाशनी की तरह और तोता छाप पाउडर वाली काली चाय।''[7]

उराँव आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति का कारण जहाँ धर्मान्तरण है वही समाज में व्याप्त अंधविश्वास एवं अशिक्षा के कारण भी इनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। निरक्षरता एवं अज्ञानता के कारण ये जमींदार या बड़े बैंक अधिकारी आदिवासी लोगों को मूर्ख बनाते है। और ऋण के नाम पर उनसे अधिक रकम ऐंठते है। उपन्यास में लेखक महेशपुर गाँव का वर्णन करते हुए वहाँ के यथार्थ से पर्दा हटाते है। जहाँ पर एक किसान अपने खेत में कुआँ खुदवाने के लिए बैंक से कुछ पैसे उधार लेता है। उसकी अज्ञानता के कारण पूरा फार्म ग्राम सेवक के द्वारा भर दिया जाता है जिस पर वह केवल अगूंठा लगाता है। किंतु यहाँ व्यापारी लोग बड़ी ही चालाकी तथा धूर्तता से एक किसान से मोटी रकम ऐंठ लेते हैं। ''ईंट के भट्ठे वाले से लेन–देन का हिसाब तय करने के बाद व्यापारी सत्रह हजार चार सौ आठ रुपये की जगह चौबीस हजार आठ सौ नब्बे रुपये का बिल तैयार करता है। और सात हजार चार सौ बयासी रुपये का बंटवारा हो जाता है।''[8] इस तरह से अज्ञानता एवं निरक्षरता के कारण एक गरीब किसान को लूट लिया जाता है। यही निरक्षरता एवं अज्ञानता आदिवासी समाज के पतन का कारण बनती है। इससे निरक्षरता के कारण वर्तमान समय में आदिवासी समाज में अंधविश्वास जैसी अनेकानेक समस्याएँ बढती है। उपन्यास में लेखक इन्हीं समस्याओं पर प्रकाश डालते है। उराँव आदिवासी में ओझा जो कि झाड़ फूंक का कार्य करता है को बैगा कहते है, तो वह बैगा भूख से पीड़ित व्यक्ति के लटके हुए शरीर को देखकर उसमे प्रेतात्मा का वास बताकर उसको झाड़ू से पीटकर निकालने के लिए कहता है ''बैगा के हाथ में झाड़ू है। उसने लालरंग की लूंगी पहन रखी है। वह नंगे पांव है। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई है। उसने अपने माथे पर राख मल रखी है। उसके कंधों पर मोर पंख लटक रहे हैं। वह चीख रहा है। उसकी चीख की भाषा समझ के बाहर है। वह बार–बार नीचे लिटाये गये आदमी के इर्द–गिर्द चक्कर काटता है और चीखता है। शायद वह यह कहना चाह रहा है कि इस आदमी के शरीर में कोई प्रेतात्मा है, जिसे वह अपने मंत्रों के प्रभाव से बाहर निकाल देगा और वह व्यक्ति उसके प्रभाव से पूरी तरह मुक्त हो जाएगा।''[9]

निष्कर्षतः – कहा जा सकता है कि काला पादरी उपन्यास में लेखक अंधकार में डूबे हुए उराँव आदिवासी समाज के लोगों के एक दर्दनाक यथार्थ से पर्दा हटाते है, जिसका मूल कारण निरक्षरता, अज्ञानता एवं इनकी आर्थिक तंगी है। जिसका समाधान धर्म परिवर्तन नहीं है, क्योंकि धर्म परिवर्तन के पश्चात् इनको अपने धर्म से तथा संस्कृति से पूर्णतः विमुख होना पड़ता है, जो इनके लिए असम्भव है। क्योंकि इसी प्रकृति से इनका अस्तित्व जुड़ा हुआ है और अपने अस्तित्व से विमुख होना इन्हें स्वीकार नहीं है। जिसके कारण इनको जीवन में अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तेजिन्दर : काला पादरी, साहित्य भण्डार, चाहचन्द (जीरो रोड), इलाहाबाद–211003, प्रथम संस्करण : 2016, पृ.सं. 29.
2. वही, पृ.सं. 62.
3. वही, पृ.सं. 46.
4. वही, पृ.सं. 57.
5. वही, पृ.सं. 103.
6. वही, पृ.सं. 59.
7. वही, पृ.सं. 72.
8. वही, पृ.सं. 20.
9. वही, पृ.सं. 85–86.

*****